देवीपूजनविधिनिरूपणम्

मास तिथि वार नक्षत्र योग करण अनुसार देवीनैवेद्य

(देवीभागवतत:)

नारद उवाच -

धर्मश्च कीदृशस्तात देव्याराधनलक्षणः ।

कथमाराधिता देवी सा ददाति परं पदम् ॥ १॥

आराधनविधिः को वा कथमाराधिता कदा ।

केन सा दुर्गनरकाद्दुर्गा त्राणप्रदा भवेत् ॥ २॥

नारदजी बोले – हे तात ! देवीके आराधनरूपी धर्मका स्वरूप क्या है ? किस प्रकारसे उपासना करनेपर वे देवी परम पद प्रदान करती हैं ? उनकी आराधनाकी विधि क्या है ? कैसे, कब और किस स्तोत्रसे आराधना करनेपर वे

भगवती दुर्गा कष्टप्रद नरकरूपी दुर्गसे उद्धार करके त्राणदायिनी होती हैं ? ॥ १-२॥

श्रीनारायण उवाच -

देवर्षे शृणु चित्तैकाग्र्येण मे विदुषां वर ।

यथा प्रसीदते देवी धर्माराधनतः स्वयम् ॥ ३॥

स्वधर्मो यादृशः प्रोक्तस्तं च मे शृणु नारद ।

अनादाविह संसारे देवी सम्पूजिता स्वयम् ॥ ४॥

परिपालयते घोरसङ्कटादिषु सा मुने ।

सा देवी पूज्यते लोकैर्यथावत्तद्विधिं शृणु ॥ ५॥

श्रीनारायण बोले – हे विद्वद्वर ! हे देवर्षे! जिस प्रकार धर्मपूर्वक आराधना करनेसे देवी स्वयं प्रसन्न हो जाती हैं, उसे अब आप एकाग्रचित्त होकर मुझसे सुनिये । हे नारद ! जैसा स्वधर्मका स्वरूप बताया गया है, उसे भी आप मुझसे सुनिये ॥ ३३ ॥ हे मुने! इस अनादि संसारमें सम्यक्रूपसे पूजित होनेपर वे देवी घोर संकटोंमें स्वयं रक्षा

करती हैं । वे भगवती जिस प्रकार लोकमें पूजी जाती हैं, वह विधि सुनिये ॥ ३-५ ॥

तिथि अनुसार भगवती का नैवेद्य द्रव्य

प्रतिपत्तिथिमासाद्य देवीमाज्येन पूजयेत् ।
घृतं दद्याद्ब्राह्मणाय रोगहीनो भवेत्सदा ॥ ६॥
द्वितीयायां शर्करया पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
शर्करां प्रददेद्विप्रे दीर्घायुर्जायते नरः ॥ ७॥
तृतीयादिवसे देव्यै दुग्धं पूजनकर्मणि ।
क्षीरं दत्त्वा द्विजाग्र्याय सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ८॥
चतुर्थ्यां पूजनेऽपूपा देया देव्यै द्विजाय च ।
अपूपा एव दातव्या न विघ्नैरभिभूयते ॥ ९॥
पञ्चम्यां कदलीजातं फलं देव्यै निवेदयेत् ।
तदेव ब्राह्मणे देयं मेधावान्पुरुषो भवेत् ॥ १०॥

पूजा [शुक्लपक्षकी] प्रतिपदा तिथिमें घृतसे देवीकी करनी चाहिये और ब्राह्मणको घृतका दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला सदा निरोग रहता है ॥ ६ ॥ द्वितीया तिथिको शर्करासे जगदम्बाका पूजन करना चाहिये और विप्रको शर्कराका ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला मनुष्य दीर्घजीवी होता है ॥ ७ ॥ तृतीया तिथिको भगवतीके पूजनकर्ममें उन्हें दुग्ध अर्पण करना चाहिये और श्रेष्ठ ब्राह्मणको दुग्धका दान करना चाहिये, ऐसा करनेसे मनुष्य सभी प्रकारके दुःखोंसे मुक्त हो जाता है ॥ ८ ॥ चतुर्थीके दिन पूआ अर्पण करके देवीका पूजन करना चाहिये और ब्राह्मणको पूआ ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य विघ्न-बाधाओंसे आक्रान्त नहीं होता ॥ ९॥ पंचमी तिथिको भगवतीका पूजन करके उन्हें केला अर्पण करे और ब्राह्मणको केलेका ही दान करे; ऐसा करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् होता है ॥ १० ॥

षष्ठीतिथौ मधु प्रोक्तं देवीपूजनकर्मणि ।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

ब्राह्मणाय च दातव्यं मधु कान्तिर्यतो भवेत् ॥ ११॥

सप्तम्यां गुडनैवेद्यं देव्यै दत्त्वा द्विजाय च ।

गुडं दत्त्वा शोकहीनो जायते द्विजसत्तम ॥ १२॥

नारिकेलमथाष्टम्यां देव्यै नैवेद्यमर्पयेत् ।

ब्राह्मणाय प्रदातव्यं तापहीनो भवेन्नरः ॥ १३॥

नवम्यां लाजमम्बायै चार्पयित्वा द्विजाय च ।

दत्त्वा सुखाधिको भूयादिह लोके परत्र च ॥ १४॥

दशम्यामर्पयित्वा तु देव्यै कृष्णतिलान्मुने ।

ब्राह्मणाय प्रदत्त्वा तु यमलोकाद्भयं न हि ॥ १५॥

षष्ठी तिथिको भगवतीके पूजनकर्ममें मधुको प्रधान बताया गया है। ब्राह्मणको मधु ही देना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य दिव्य कान्तिवाला हो जाता है॥११॥ हे मुनिश्रेष्ठ! सप्तमी तिथिको भगवतीको गुड़का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मणको गुड़का दान करनेसे मनुष्य सभी प्रकारके शोकोंसे मुक्त हो जाता है ॥ १२ ॥अष्टमीको भगवतीको नारियलका नैवेद्य अर्पित करना चाहिये और ब्राह्मणको भी नारियलका दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला मनुष्य

सभी सन्तापोंसे रहित हो जाता है ॥ १३ ॥ नवमीके दिन भगवतीको लावा अर्पण करनेके बाद ब्राह्मणको भी लावाका दान करनेसे मनुष्य इस लोकमें तथा परलोकमें परम सुखी रहता है॥१४॥ हे मुने! दशमी तिथिको भगवतीको काले तिल अर्पित करने और ब्राह्मणको उसी तिलका दान करनेसे मनुष्यको यमलोकका भय नहीं रह जाता ॥ १५ ॥

एकादश्यां दधि तथा देव्यै चार्पयते तु यः ।

ददाति ब्राह्मणायैतद्देवीप्रियतमो भवेत् ॥ १६॥

द्वादश्यां पृथुकान्देव्यै दत्त्वाचार्याय यो ददेत् ।

तानेव च मुनिश्रेष्ठ स देवीप्रियतां व्रजेत् ॥ १७॥

त्रयोदश्यां च दुर्गायै चणकान्प्रददाति च ।

तानेव दत्त्वा विप्राय प्रजासन्ततिमान्भवेत् ॥ १८॥

चतुर्दश्यां च देवर्षे देव्यै सक्तून्प्रयच्छति ।

तानेव दद्याद्विप्राय शिवस्य दयितो भवेत् ॥ १९॥

पायसं पूर्णिमातिथ्यामपर्णायै प्रयच्छति ।

ददाति च द्विजाग्र्याय पितॄनुद्धरतेऽखिलान् ॥ २०॥

तत्तिथौ हवनं प्रोक्तं देवीप्रीत्यै महामुने ।

तत्तत्तिथ्युक्तवस्तूनामशेषारिष्टनाशनम् ॥ २१॥

जो मनुष्य एकादशी तिथिको भगवतीको दधि अर्पित करता है और ब्राह्मणको भी दधि प्रदान करता है, वह देवीका परम प्रिय हो जाता है ॥ १६ ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! जो द्वादशीके दिन भगवतीको चिउड़ेका भोग लगाकर आचार्यको भी चिउड़ेका दान करता है, वह भगवतीका प्रियपात्र बन जाता है ॥ १७ ॥ जो त्रयोदशीको भगवतीको चना अर्पित करता है और ब्राह्मणको चनेका दान करता है, वह प्रजाओं तथा सन्तानोंसे सदा सम्पन्न रहता है ॥ १८ ॥ हे देवर्षे! जो मनुष्य चतुर्दशीके दिन भगवतीको सत्तू अर्पण करता और ब्राह्मणको भी सत्तू प्रदान करता है, वह भगवान् शंकरका प्रिय हो जाता है ॥ १९ ॥ जो पूर्णिमा तिथिको भगवती अपर्णाको खीरका भोग लगाता है और श्रेष्ठ ब्राह्मणको खीर प्रदान करता है, वह अपने सभी पितरोंका उद्धार कर देता है ॥ २० ॥ हे महामुने! देवीकी प्रसन्नताके लिये उसी तिथिको हवन भी बताया गया है।

जिस तिथिमें नैवेद्यके लिये जो वस्तु बतायी गयी है, उसी वस्तुसे उन-उन तिथियोंमें हवन करनेसे सभी विपत्तियोंका नाश हो जाता है ॥ २१ ॥

तिथि	नैवेद्य	फल
प्रतिपदा	घृत	निरोगता
द्वितीया	शर्करा	दीर्घायुष्य
तृतीया	दुग्ध	दुःख मुक्ति
चतुर्थी	पूआ	निर्विघ्नता
पञ्चमी	केला	बुद्धिमत्ता
षष्ठी	मधु	दिव्यकान्ति
सप्तमी	गुड़	शोकमुक्ति
अष्टमी	नारियल	सन्ताप नाश
नवमी	लावा	परम् सुख
दशमी	तिल	यमलोक से मुक्ति
एकादशी	दही	देवी का प्रेमपात्र

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

द्वादशी	चिउड़ा	""
त्रयोदशी	चना	सन्तानवान
चतुर्दशी	सत्तू	शिवप्रिय
पूर्णिमा/अमावस्या	खीर	पितृ उद्धार

रविवारे पायसं च नैवेद्यं परिकीर्तितम् ।

सोमवारे पयः प्रोक्तं भौमे च कदलीफलम् ॥ २२॥

बुधवारे च सम्प्रोक्तं नवनीतं नवं द्विज ।

गुरुवारे शर्करां च सितां भार्गववासरे ॥ २३॥

शनिवारे घृतं गव्यं नैवेद्यं परिकीर्तितम् ।

वार अनुसार भगवती का नैवेद्य द्रव्य

रविवारको खीरका नैवेद्य अर्पण करना चाहिये । सोमवारको दूध और मंगलवारको केलेका भोग लगाना

बताया गया है ॥ २२ ॥ हे द्विज ! बुधको ताजा मक्खन भोगके लिये कहा गया है। गुरुवारको रक्त शर्करा, शुक्रवारको श्वेत शर्करा और शनिवारको गायका घृत नैवेद्यके रूपमें बताया गया है ॥ २३ ॥

वार	नैवेद्य द्रव्य
रविवार	खीर
सोमवार	दूध
ममंगलवार	केला
बुधवार	सद्यः नवनीत
बृहस्पतिवार	रक्त शर्करा
शुक्रवार	श्वेत शर्करा
शनिवार	गोघृत

सप्तविंशतिनक्षत्रनैवेद्यं श्रूयतां मुने ॥ २४॥

घृतं तिलं शर्करां च दधि दुग्धं किलाटकम् ।

दधिकूर्ची मोदकं च फेणिकां घृतमण्डकम् ॥ २५॥

कंसारं वटपत्रं च घृतपूरमतः परम् ।

वटकं कोकरसकं पूरणं मधु सूरणम् ॥ २६॥

गुडं पृथुकद्राक्षे च खर्जूरं चैव चारकम् ।

अपूपं नवनीतं च मुद्गं मोदक एव च ॥ २७॥

मातुलिङ्गमिति प्रोक्तं भनैवेद्यं च नारद ।

नक्षत्र अनुसार भगवती का नैवेद्य द्रव्य

हे मुने! अब सत्ताईस नक्षत्रोंमें दिये जानेवाले नैवेद्यके विषयमें सुनिये । घी, तिल, चीनी, दही, दूध, मलाई, लस्सी, लड्डू, फेणिका, घृतमण्ड (शक्करपारा), कंसार (गेहूँके आटे तथा गुड़से निर्मित पदार्थ विशेष), वटपत्र (पापड़), घेवर, वटक (बड़ा), कोकरस (खजूरका रस), घृतमिश्रित चनेका चूर्ण, मधु, सूरन, गुड़, चिउड़ा, दाख, खजूर, चारक, पूआ, मक्खन, मूँगका लड्डू और विजौरा नींबू – हे नारद! ये सत्ताईस नक्षत्रोंके नैवेद्य बताये गये हैं ॥ २४ -२७ ॥

नक्षत्र	नैवेद्य
अश्विन	घी
भरणी	तिल
कृत्तिका	चीनी
रोहिणी	दही
मृगशिरा	दूध
आर्द्रा	मलाई
पुनर्वसु	लस्सी
पुष्य	लड्डू
आश्लेषा	फेणिका,
मघा	घृतमण्ड (शक्करपारा)
पूर्वाफाल्गुनी	कंसार (गेहूँके आटे तथा गुड़से निर्मित पदार्थ विशेष)
उत्तराफाल्गुनी	वटपत्र (पापड़)

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

हस्त	घेवर
चित्रा	वटक (बड़ा)
स्वाति	कोकरस (खजूरका रस)
विशाखा	घृतमिश्रित चनेका चूर्ण
अनुराधा	मधु
ज्येष्ठा	सूरन
मूल	गुड़
पूर्वाषाढ़ा	चिउड़ा
उत्तराषाढ़ा	दाख
श्रवण	खजूर
धनिष्ठा	चारक
शतभिषा	पूआ
पूर्वाभाद्रपद	मक्खन
उत्तराभाद्रपद	मूँगका लड्डू
रेवती	विजौरा नींबू

योग अनुसार भगवती का नैवेद्य द्रव्य

विष्कम्भादिषु योगेषु प्रवक्ष्यामि निवेदनम् ॥ २८॥

पदार्थानां कृतेष्वेषु प्रीणाति जगदम्बिका ।

गुडं मधु घृतं दुग्धं दधि तक्रं त्वपूपकम् ॥ २९॥

नवनीतं कर्कटीं च कूष्माण्डं चापि मोदकम् ।

पनसं कदलं जम्बुफलमाम्रफलं तिलम् ॥ ३०॥

नारङ्गं दाडिमं चैव बदरीफलमेव च ।

धात्रीफलं पायसञ्च पृथुकं चणकं तथा ॥ ३१॥

नारिकेलं जम्भफलं कसेरुं सूरणं तथा ।

एतानि क्रमशो विप्र नैवेद्यानि शुभानि च ॥ ३२॥

विष्कम्भादिषु योगेषु निर्णीतानि मनीषिभिः ।

अब विष्कम्भ आदि योगोंमें नैवेद्य अर्पणके विषयमें कहूँगा। इन पदार्थोंको अर्पित करनेसे जगदम्बिका प्रसन्न

होती हैं। गुड़, मधु, घी, दूध, दही, मट्ठा, पूआ, मक्खन, ककड़ी, कोंहड़ा, लड्डू, कटहल, केला, जामुन, आम, तिल, संतरा, अनार, बेरका फल, आमला, खीर, चिउड़ा, चना, नारियल, जम्भफल (जम्भीरा), कसेरू और सूरन - हे विप्र ! ये शुभ नैवेद्य क्रमशः विष्कम्भ आदि योगोंमें [भगवतीको] अर्पण करनेके लिये विद्वानोंके द्वारा निश्चित किये गये हैं ॥ २८-३२ ॥

योग	नैवेद्य
विष्कुम्भ	गुड़
प्रीति	मधु
आयुष्मान	घी
सौभाग्य	दूध
शोभन	दही
अतिगण्ड	मट्ठा
सुकर्मा	पूआ
धृति	मक्खन

शूल	ककड़ी
गण्ड	कोंहड़ा
वृद्धि	लड्डू
ध्रुव	कटहल
व्याघात	केला
हर्षण	जामुन
वज्र	आम
सिद्धि	तिल
व्यातीपात	संतरा
वरीयान,	अनार
परिघ	बेरका फल
शिव	आमला
सिद्ध	खीर
साध्य	चिउड़ा
शुभ	चना

शुक्ल	**नारियल**
ब्रह्म	**जम्भफल (जम्भीरा),**
इन्द्र	**कसेरू**
वैधृति	**सूरन**

अथ नैवेद्यमाख्यास्ये करणानां पृथङ्मुने ॥ ३३॥

कंसारं मण्डकं फेणी मोदकं वटपत्रकम् ।

लड्डुकं घृतपूरं च तिलं दधि घृतं मधु ॥ ३४॥

करणानामिदं प्रोक्तं देवीनैवेद्यमादरात् ।

हे मुने! इसके बाद अब मैं भिन्न-भिन्न करणोंके नैवेद्यके बारेमें बताऊँगा । कंसार, मण्डक, फेनी, मोदक, वटपत्र, लड्डू, घृतपूर, तिल, दही, घी और मधु – ये करणोंके नैवेद्य बताये गये हैं, जिन्हें आदरपूर्वक भगवतीको अर्पण करना चाहिये ॥ ३३-३४॥

करण	**नैवेद्य**

बव	कंसार
बालव	मण्डक
कौलव	फेनी
तैतिल	मोदक
गर	वटपत्र
वणिज	लड्डू
विष्टि	घृतपूर
शकुनि	तिल
चतुष्पाद	दही
नाग	घी
किस्तुघ्न	मधु

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि देवीप्रीतिकरं परम् ॥ ३५॥

विधानं नारदमुने शृणु तत्सर्वमादृतः ।

चैत्रशुद्धतृतीयायां नरो मधुकवृक्षकम् ॥ ३६॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

पूजयेत्पञ्च खाद्यं च नैवेद्यमुपकल्पयेत् ।
एवं द्वादशमासेषु तृतीयातिथिषु क्रमात् ॥ ३७॥
शुक्लपक्षे विधानेन नैवेद्यमभिदध्महे ।
वैशाखमासे नैवेद्यं गुडयुक्तं च नारद ॥ ३८॥
ज्येष्ठमासे मधु प्रोक्तं देवीप्रीत्यर्थमेव तु ।
आषाढे नवनीतं च मधुकस्य निवेदनम् ॥ ३९॥
श्रावणे दधि नैवेद्यं भाद्रमासे च शर्करा ।
आश्विने पायसं प्रोक्तं कार्तिके पय उत्तमम् ॥ ४०॥
मार्गे फेण्युत्तमा प्रोक्ता पौषे च दधिकूर्चिका ।
माघे मासि च नैवेद्यं घृतं गव्यं समाहरेत् ॥ ४१॥
नारिकेलं च नैवेद्यं फाल्गुने परिकीर्तितम् ।
एवं द्वादशनैवेद्यैर्मासे च क्रमतोऽर्चयेत् ॥ ४२॥

विशिष्ट देवी पूजा विधि सहित मास नैवेद्य

हे नारदमुने! अब मैं देवीको प्रसन्न करनेवाले दूसरे श्रेष्ठ

विधानका वर्णन करूँगा, उस सम्पूर्ण विधानको आदरपूर्वक सुनिये । चैत्रमासके शुक्लपक्षमें तृतीया तिथिको महुएके वृक्षमें भगवतीकी भावना करके उनका पूजन करे और नैवेद्यमें पाँच प्रकारके भोज्य-पदार्थ अर्पित करे । इसी प्रकार बारहों महीनोंके शुक्लपक्षकी तृतीया तिथिको पूजन-विधानके साथ क्रमशः नैवेद्य अर्पित करे। हे नारद ! वैशाखमासमें गुड़मिश्रित पदार्थ निवेदित करना चाहिये । ज्येष्ठ–महीनेमें भगवतीकी प्रसन्नताके लिये मधु अर्पित करना चाहिये। आषाढ़-महीनेमें नवनीत और महुएके रससे बना हुआ पदार्थ अर्पित करना चाहिये ॥ ३५–३९ ॥

श्रावण-मासमें दही, भाद्रपद - मासमें शर्करा, आश्विन-मासमें खीर तथा कार्तिक-मासमें दूधका नैवेद्य उत्तम कहा गया है। मार्गशीर्ष - महीनेमें फेनी एवं पौष-माहमें दधिकूचिका (लस्सी) का नैवेद्य उत्तम कहा गया है । माघके महीनेमें गायके घीका नैवेद्य अर्पण करना चाहिये; फाल्गुनके महीनेमें नारियलका नैवेद्य बताया गया है । इस प्रकार बारह महीनों में बारह नैवेद्योंसे क्रमशः भगवतीकी

पूजा करनी चाहिये ॥ ४०-४२ ॥

मास	नैवेद्य
चैत्र	पञ्च नैवेद्य
वैशाख	गुड़ मिश्रित नैवेद्य
ज्येष्ठ	मधु
आषाढ़	नवनीतमहुएसेनिर्मित भोज्य
श्रावण	दही
भाद्रपद	शर्करा
आश्विन	खीर
कार्तिक	दूध
मार्गशीर्ष	फेनी
पौष	लस्सी(दधि कुचिका)
माघ	गोघृत
फाल्गुन	नारिकेल

संवत्सर पूजा हेतु देवी स्तोत्रम्

मङ्गला वैष्णवी माया कालरात्रिर्दुरत्यया ।
महामाया च मतङ्गी काली कमलवासिनी ॥ ४३॥
शिवा सहस्रचरणा सर्वमङ्गलरूपिणी ।
एभिर्नामपदैर्देवीं मधूके परिपूजयेत् ॥ ४४॥
ततः स्तुवीत देवेशीं मधूकस्थां महेश्वरीम् ।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं व्रतपूर्णत्वसिद्धये ॥ ४५॥
नमः पुष्करनेत्रायै जगद्धात्र्यै नमोऽस्तु ते ।
माहेश्वर्यै महादेव्यै महामङ्गलमूर्तये ॥ ४६॥
परमा पापहन्त्री च परमार्गप्रदायिनी ।
परमेश्वरी प्रजोत्पत्तिः परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ४७॥
मददात्री मदोन्मत्ता मानगम्या महोन्नता ।
मनस्विनी मुनिध्येया मार्तण्डसहचारिणी ॥ ४८॥
जय लोकेश्वरि प्राज्ञे प्रलयाम्बुदसन्निभे ।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

महामोहविनाशार्थं पूजितासि सुरासुरैः ॥ ४९॥

यमलोकाभावकर्त्री यमपूज्या यमाग्रजा ।

यमनिग्रहरूपा च यजनीये नमो नमः ॥ ५०॥

समस्वभावा सर्वेशी सर्वसङ्गविवर्जिता ।

सङ्गनाशकरी काम्यरूपा कारुण्यविग्रहा ॥ ५१॥

कङ्कालक्रूरा कामाक्षी मीनाक्षी मर्मभेदिनी ।

माधुर्यरूपशीला च मधुरस्वरपूजिता ॥ ५२॥

महामन्त्रवती मन्त्रगम्या मन्त्रप्रियङ्करी ।

मनुष्यमानसगमा मन्मथारिप्रियङ्करी ॥ ५३॥

अश्वत्थवटनिम्बाम्रकपित्थबदरीगते ।

पनसार्ककरीरादिक्षीरवृक्षस्वरूपिणि ॥ ५४॥

दुग्धवल्लीनिवासार्हे दयनीये दयाधिके ।

दाक्षिण्यकरुणारूपे जय सर्वज्ञवल्लभे ॥ ५५॥

मंगला, वैष्णवी, माया, कालरात्रि, दुरत्यया, महामाया, मतंगी, काली, कमलवासिनी, शिवा, सहस्रचरणा और

सर्वमंगलरूपिणी – इन नामोंका उच्चारण करते हुए महुएके वृक्षमें भगवतीकी पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात् सभी कामनाओंकी सिद्धि तथा व्रतकी पूर्णताके लिये महुएके वृक्षमें स्थित देवेशी महेश्वरीकी इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये ॥ ४३–४५ ॥

कमलके समान नेत्रोंवाली आप जगद्धात्रीको नमस्कार है। आप महामंगलमूर्तिस्वरूपा महेश्वरी महादेवीको नमस्कार है। [हे देवि!] परमा, पापहन्त्री, परमार्गप्रदायिनी, परमेश्वरी, प्रजोत्पत्ति, परब्रह्मस्वरूपिणी, मददात्री, मदोन्मत्ता, मानगम्या, महोन्नता, मनस्विनी, मुनिध्येया, मार्तण्डसहचारिणी- ये आपके नाम हैं। हे लोकेश्वरि ! हे प्राज्ञे ! आपकी जय हो । हे प्रलयकालीन मेघके समान प्रतीत होनेवाली ! देवता और दानव महामोहके विनाशके लिये आपकी उपासना करते हैं ॥ ४६–४९ ॥

आप यमलोक मिटानेवाली, यमराजपूज्या, यमकी अग्रजा और यमनिग्रहस्वरूपिणी हैं । हे परमाराध्ये ! आपको बार-बार नमस्कार है। आप समस्वभावा, सर्वेशी, सर्वसंगविवर्जिता, संगनाशकरी, काम्यरूपा,

कारुण्यविग्रहा, कंकालक्रूरा, कामाक्षी, मीनाक्षी, मर्मभेदिनी, माधुर्यरूपशीला, मधुरस्वरपूजिता, महामन्त्रवती, मन्त्रगम्या, मन्त्रप्रियंकरी, मनुष्यमानसगमा और मन्मथारिप्रियंकरी- इन नामोंसे विख्यात हैं ॥ ५०-५३॥

पीपल, वट, नीम, आम, कैथ एवं बेरमें निवास करनेवाली आप कटहल, मदार, करील, जामुन आदि क्षीरवृक्षस्वरूपिणी हैं। दुग्धवल्लीमें निवास करनेवाली, दयनीय, महान् दयालु, कृपालुता एवं करुणाकी साक्षात् मूर्तिस्वरूपा एवं सर्वज्ञजनोंकी प्रियस्वरूपिणि! आपकी जय हो ॥ ५४-५५ ॥

एवं स्तवेन देवेशीं पूजनान्ते स्तुवीत ताम् ।

व्रतस्य सकलं पुण्यं लभते सर्वदा नरः ॥ ५६॥

नित्यं यः पठते स्तोत्रं देवीप्रीतिकरं नरः ।

आधिव्याधिभयं नास्ति रिपुभीतिर्न तस्य हि ॥ ५७॥

अर्थार्थी चार्थमाप्नोति धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ।

कामानवाप्नुयात्कामी मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ॥ ५८॥

ब्राह्मणो वेदसम्पनो विजयी क्षत्रियो भवेत् ।

वैश्यश्च धनधान्याढ्यो भवेच्छूद्रः सुखाधिकः ॥ ५९॥

स्तोत्रमेतच्छ्राद्धकाले यः पठेत्प्रयतो नरः ।

पितॄणामक्षया तृप्तिर्जायते कल्पवर्तिनी ॥ ६०॥

एवमाराधनं देव्याः समुक्तं सुरपूजितम् ।

यः करोति नरो भक्त्या स देवीलोकभाग्भवेत् ॥ ६१॥

देवीपूजनतो विप्र सर्वे कामा भवन्ति हि ।

सर्वपापहतिः शुद्धा मतिरन्ते प्रजायते ॥ ६२॥

यत्र तत्र भवेत्पूज्यो मान्यो मानधनेषु च ।

जायते जगदम्बायाः प्रसादेन विरञ्चिज ॥ ६३॥

नरकाणां न तस्यास्ति भयं स्वप्नेऽपि कुत्रचित् ।

महामायाप्रसादेन पुत्रपौत्रादिवर्धनः ॥ ६४॥

देवीभक्तो भवत्येव नात्र कार्या विचारणा ।

इत्येवं ते समाख्यातं नरकोद्धारलक्षणम् ॥ ६५॥

पूजनं हि महादेव्याः सर्वमङ्गलकारकम् ।

मधूकपूजनं तद्वन्मासानां क्रमतो मुने ॥ ६६॥
सर्वं समाचरेद्यस्तु पूजनं मधुकाह्वयम् ।
न तस्य रोगबाधादिभयमुद्भवतेऽनघ ॥ ६७॥
अथान्यदपि वक्ष्यामि प्रकृतेः पञ्चकं परम् ।
नाम्ना रूपेण चोत्पत्त्या जगदानन्ददायकम् ॥ ६८॥
साख्यानं च समाहात्म्यं प्रकृतेः पञ्चकं मुने ।
कुतूहलकरं चैव शृणु मुक्तिविधायकम् ॥ ६९॥

इति देवीभागवते अष्टमस्कन्धे चतुर्विंशाध्यायान्तर्गतं
देवीपूजनविधिनिरूपणं समाप्तम् ॥

इस प्रकार पूजनके पश्चात् इस स्तोत्रसे उन देवेश्वरीकी स्तुति करनी चाहिये। ऐसा करनेवाला मनुष्य व्रतका

सम्पूर्ण पुण्य प्राप्त कर लेता है ॥ ५६ ॥ जो मनुष्य भगवतीको प्रसन्न करनेवाले इस स्तोत्रका नित्य पाठ करता है, उसे किसी प्रकारके शारीरिक या मानसिक रोगका भय नहीं होता और उसे शत्रुओंका भी कोई भय नहीं रहता। इस स्तोत्रके प्रभावसे अर्थ चाहनेवाला अर्थ प्राप्त कर लेता है, धर्मके अभिलाषीको धर्मकी प्राप्ति हो जाती है, कामीको काम सुलभ हो जाते हैं और मोक्षकी इच्छा रखनेवालेको मोक्ष प्राप्त हो जाता है । इस स्तोत्रके पाठसे ब्राह्मण वेदसम्पन्न, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्यसे परिपूर्ण और शूद्र परम सुखी हो जाता है। जो मनुष्य श्राद्धके समय मनको एकाग्र करके इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसके पितरोंकी एक कल्पतक स्थायी रहनेवाली अक्षय तृप्ति हो जाती है॥५७–६०॥

[हे नारद!] इस प्रकार मैंने देवताओंके द्वारा देवीकी की गयी आराधना तथा पूजाके विषयमें आपको भलीभाँति बता दिया । जो मनुष्य भक्तिपूर्वक भगवतीकी उपासना करता है, वह देवीलोकका अधिकारी हो जाता है ॥ ६१ ॥

हे विप्र ! भगवतीके पूजनसे मनुष्यकी सभी कामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं और अन्तमें उसकी बुद्धि सभी पापोंसे रहित होकर निर्मल हो जाती है ॥ ६२ ॥ हे ब्रह्मपुत्र! भगवतीके अनुग्रहसे मनुष्य जहाँ-तहाँ पूजित होता है और मानको ही धन माननेवाले पुरुषोंमें सम्माननीय हो जाता है। उसे स्वप्न में भी नरकोंका भय नहीं रहता। महामाया भगवतीकी कृपासे देवीका भक्त पुत्र तथा पौत्रोंसे सदा सम्पन्न रहता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ६३-६४ ॥

[हे नारद !] यह जो मैंने आपसे महादेवीके पूजनका वर्णन किया है, वह नरकसे उद्धार करनेवाला तथा सम्पूर्ण रूपसे मंगलकारी है । हे मुने! चैत्र आदि महीनोंमें क्रमसे महुएके वृक्षमें भगवतीकी पूजा करनी चाहिये । हे अनघ ! जो मनुष्य मधूक नामक वृक्षमें सम्यक्रूपसे पूजन करता है; उसे रोग, बाधा आदिका कोई भय उत्पन्न नहीं होता ॥ ६५ – ६७ ॥

अब मैं देवी मूलप्रकृतिके श्रेष्ठ पंचकसे सम्बन्धित अन्य प्रसंगका वर्णन कर रहा हूँ। यह प्रसंग अपने नाम, रूप

और प्रादुर्भावसे सम्पूर्ण जगत्को आनन्दित कर देनेवाला है। हे मुने! यह प्रकृतिपंचक कुतूहल उत्पन्न करनेवाला तथा मुक्तिप्रदायक है; आख्यान तथा माहात्म्यसहित इसका श्रवण कीजिये ॥ ६८-६९ ।।